रतन टाटा: एक संपूर्ण जीवनी

पुस्तक का विस्तृत और संपूर्ण सारांश (शुरू से अंत तक)

मूल लेखक: ए.के. गांधी

विस्तृत अनुवादित संस्करण

अध्याय 1: पारिवारिक पृष्ठभूमि और शुरुआत

भारत के औद्योगिक जगत के सबसे चमकते सितारे और टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष रतन टाटा का जीवन और उनकी उपलब्धियां अद्वितीय हैं। इस विशाल औद्योगिक साम्राज्य की नींव बहुत पहले रखी गई थी। पारसी समुदाय, जो सैकड़ों साल पहले फारस (ईरान) में रहता था, व्यापार और उद्योग की तलाश में धीरे-धीरे दुनिया भर में फैल गया। इसी क्रम में पारसी भारत भी आए। हालांकि इनकी संख्या कम थी, लेकिन इन्होंने शिक्षा, विज्ञान और व्यापार के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। गुजरात का नवसारी शहर पारसियों का एक प्रमुख केंद्र बना। ब्रिटिश शासन के दौरान संसद के सदस्य चुने गए दादाभाई नौरोजी का जन्म भी नवसारी में हुआ था।

इसी नवसारी में टाटा घराने के संस्थापक जमशेदजी टाटा के पिता नौशेरवांजी टाटा का निवास था। उनका परिवार पीढ़ियों से पारसी पुजारियों (पुरोहितों) का काम करता आ रहा था। लेकिन नौशेरवांजी टाटा परिवार के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस सदियों पुरानी परंपरा को छोड़कर कुछ नया करने का फैसला किया। उन्होंने व्यापार को अपनी आजीविका का साधन बनाया और नवसारी छोड़कर बॉम्बे (अब मुंबई) आ गए। अनुभव बढ़ने के साथ, उन्होंने अपने इकलौते बेटे जमशेदजी को भी बॉम्बे बुला लिया ताकि वह भी व्यापार के गुर सीख सकें।

अध्याय 2: जमशेदजी टाटा (भारतीय उद्योग के जनक)

3 मार्च 1839 को नवसारी में जन्मे जमशेदजी नौशेरवांजी टाटा को "भारतीय उद्योग का पिता" कहा जाता है। 14 साल की उम्र में वे बॉम्बे आ गए। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वे पिता के व्यवसाय में शामिल हो गए। 1868 में मात्र 2100 रुपये की पूंजी के साथ उन्होंने अपनी एक ट्रेडिंग फर्म शुरू की।

जमशेदजी ने कपड़ा मिलों से शुरुआत की। 1869 में उन्होंने एक पुरानी तेल मिल खरीदी और उसे कपड़ा कारखाने में बदल दिया। बाद में उन्होंने नागपुर में 'सेंट्रल इंडिया स्पिनिंग, वीविंग एंड

मैन्युफैक्चरिंग कंपनी' (एम्प्रेस मिल) की स्थापना की। उन्होंने स्वदेशी कॉटन मिल को भी सफलता के शिखर पर पहुंचाया। उन्होंने अपने कर्मचारियों के लिए पेंशन फंड (1886) और दुर्घटना मुआवजा (1895) जैसी सुविधाएं शुरू कीं, जो उस समय दुनिया के लिए भी नई बातें थीं।

जमशेदजी के तीन बड़े सपने

जमशेदजी ने एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत के लिए तीन बड़े सपने देखे थे:

- **लौह और इस्पात कंपनी (Iron and Steel Company):** भारत में अपना स्वयं का मजबूत बुनियादी ढांचा तैयार करने के लिए। उन्होंने अमेरिका और यूरोप के विशेषज्ञों से मदद ली, हालांकि यह सपना उनके निधन के बाद 'टाटा स्टील' के रूप में साकार हुआ।
- **एक विश्वस्तरीय होटल:** भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1903 में उन्होंने बॉम्बे में 'ताज महल होटल' का निर्माण करवाया। यह बॉम्बे की पहली इमारत थी जिसमें बिजली थी।
- **विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थान:** विज्ञान और शोध के लिए उन्होंने एक शानदार संस्थान का सपना देखा था, जो उनके निधन के बाद 1911 में बैंगलोर में 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस' (IISc) के रूप में स्थापित हुआ।

अध्याय 3: विरासत को आगे बढ़ाना (सर दोराबजी, सर रतन टाटा और आर.डी. टाटा)

1904 में जमशेदजी के निधन के बाद, उनके बड़े बेटे सर दोराबजी टाटा ने उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का बीड़ा उठाया। उनके छोटे भाई सर रतन टाटा और चचेरे भाई आर.डी. टाटा ने उनका पूरा साथ दिया।

सर दोराबजी टाटा और लेडी मेहरबाई

दोराबजी के नेतृत्व में ही 1907 में साकची (जिसे बाद में जमशेदपुर कहा गया) में 'टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी' (अब टाटा स्टील) की स्थापना हुई। इसके अलावा उन्होंने 'टाटा पावर' की भी नींव रखी। खेलों में गहरी रुचि रखने वाले दोराबजी ने 'इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन' के अध्यक्ष के रूप में पेरिस ओलंपिक में भारतीय दल का खर्च उठाया। उनकी पत्नी लेडी मेहरबाई ने भारत में महिला शिक्षा, पर्दा प्रथा के उन्मूलन और छुआछूत के खिलाफ बड़े आंदोलन चलाए। 1931 में ल्यूकेमिया से उनके निधन के बाद, दोराबजी ने 'लेडी टाटा मेमोरियल ट्रस्ट' की स्थापना की।

सर रतन टाटा और आर.डी. टाटा

जमशेदजी के छोटे बेटे सर रतन टाटा एक अत्यंत परोपकारी व्यक्ति थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ महात्मा गांधी के संघर्ष में भारी आर्थिक मदद (1,25,000 रुपये) भेजी। उन्होंने गोपाल कृष्ण गोखले की 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' को भी वित्तीय सहायता दी। भारत की गरीबी के कारणों का अध्ययन करने के लिए उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में भी अनुदान दिया।

आर.डी. टाटा (रतन दादाभाई टाटा), जो जमशेदजी के चचेरे भाई थे, ने टाटा कंपनी के वित्त और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को संभाला। उन्होंने हांगकांग, शंघाई, पेरिस और न्यूयॉर्क में कंपनी की शाखाएं स्थापित कीं।

नवल होर्मुसजी टाटा

सर रतन टाटा का कोई अपना बच्चा नहीं था। 1918 में उनके निधन के बाद, उनकी पत्नी लेडी नवाजबाई ने जे.एन. पेटिट पारसी अनाथालय में पल रहे एक बच्चे को गोद लिया, जिसका नाम नवल होर्मुसजी टाटा था। अनाथालय से निकलकर टाटा परिवार का हिस्सा बनने के बावजूद, नवल ने कभी अपना अतीत नहीं भुलाया। वे हमेशा कर्मचारियों और मजदूरों के हितों के पैरोकार रहे। नवल टाटा इंडियन हॉकी फेडरेशन के अध्यक्ष भी रहे, और उनके कार्यकाल में भारत ने ओलंपिक में तीन स्वर्ण पदक जीते।

अध्याय 4: जे.आर.डी. टाटा का स्वर्णिम युग

जहांगीर रतन दादाभाई (J.R.D.) टाटा का जन्म 1904 में पेरिस में हुआ था। वे आर.डी. टाटा और सुज़ैन (फ्रांसीसी महिला) के पुत्र थे। 1938 में उन्हें टाटा संस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और उन्होंने लगभग 53 वर्षों तक टाटा समूह का नेतृत्व किया।

भारतीय उड्डयन के जनक (Father of Indian Aviation)

जे.आर.डी. भारत के पहले लाइसेंस प्राप्त पायलट थे। 1932 में उन्होंने भारत की पहली राष्ट्रीय एयरलाइन 'टाटा एयरलाइंस' की शुरुआत की, जिसे बाद में 'एयर इंडिया' नाम दिया गया। एयर इंडिया की पहली उड़ान कराची से बॉम्बे तक जे.आर.डी. ने स्वयं उड़ाई थी। 1953 में जवाहरलाल नेहरू की सरकार द्वारा एयर इंडिया का राष्ट्रीयकरण किए जाने का उन्होंने कड़ा विरोध किया था, फिर भी वे लंबे समय तक इसके अध्यक्ष बने रहे।

टाटा समूह का अभूतपूर्व विस्तार

जब जे.आर.डी. ने अध्यक्ष पद संभाला था, तब टाटा समूह में 14 कंपनियां थीं। उनके 50 साल के कार्यकाल के अंत तक (1988) यह संख्या 95 तक पहुंच गई। उन्होंने टीसीएस (TCS), टाटा मोटर्स, टाटा केमिकल्स और टाइटन जैसी कंपनियों को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। 1992 में भारत सरकार ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

अध्याय 5: रतन टाटा का उदय और नेतृत्व

रतन नवल टाटा का जन्म 1937 में बॉम्बे में हुआ। वे नवल होर्मुसजी टाटा के पुत्र हैं। जब वे केवल सात वर्ष के थे, उनके माता-पिता का तलाक हो गया। उनका पालन-पोषण उनकी दादी लेडी नवाजबाई ने किया। रतन टाटा ने अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय से वास्तुकला (Architecture) और संरचनात्मक इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की।

शुरुआती संघर्ष

1962 में भारत लौटने के बाद, जे.आर.डी. टाटा ने उन्हें अनुभव प्राप्त करने के लिए जमशेदपुर के टाटा स्टील प्लांट में भेज दिया। वहां उन्होंने सामान्य मजदूरों की तरह नीली वर्दी पहनकर काम किया, जिसमें चूना पत्थर उठाने से लेकर भट्टी तक का काम शामिल था। 1971 में उन्हें भारी घाटे में चल रही कंपनी NELCO (नेशनल रेडियो एंड इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी) का प्रभार दिया गया, जिसे उन्होंने अपनी सूझबूझ से संकट से निकाला।

अध्यक्ष पद और उदारीकरण का दौर

25 मार्च 1991 को जे.आर.डी. टाटा ने रतन टाटा को अपना उत्तराधिकारी घोषित करते हुए 'टाटा संस' का अध्यक्ष नियुक्त किया। यह वह समय था जब भारत सरकार आर्थिक उदारीकरण (Liberalization) की नीतियां ला रही थी। उस समय टाटा की विभिन्न कंपनियों के प्रमुख (सत्रप) बहुत शक्तिशाली हो गए थे और अपने-अपने तरीके से काम कर रहे थे। रतन टाटा की पहली चुनौती उन सबको 'टाटा संस' के छत्र के नीचे लाना था। उन्होंने अध्यक्ष और प्रबंध निदेशकों के लिए सेवानिवृत्ति की आयु (75 और 65 वर्ष) निर्धारित की और एक मजबूत 'समूह कार्यकारी कार्यालय' की स्थापना की।

दृढ़ इरादे और टाटा मोटर्स की सफलता

2000-01 में टाटा मोटर्स (उस समय टेल्को) को भारी नुकसान (500 करोड़) का सामना करना पड़ा। लेकिन रतन टाटा के दृढ़ नेतृत्व में कंपनी ने जबरदस्त वापसी की। 1998 में उनका सबसे बड़ा सपना साकार हुआ जब भारत की पहली पूरी तरह स्वदेशी कार 'टाटा इंडिका' (Tata Indica) लॉन्च हुई। इसे जनता का इतना प्यार मिला कि लॉन्च के समय 1,15,000 कारों की एडवांस बुकिंग हो गई।

अध्याय 6: वैश्विक अधिग्रहण और "लखटकिया कार" का सपना

रतन टाटा का नेतृत्व टाटा समूह को केवल भारत तक सीमित नहीं रखना चाहता था। 2000 के दशक में उन्होंने कई ऐतिहासिक अंतर्राष्ट्रीय अधिग्रहण किए:

- **टेटली (Tetley):** 2000 में टाटा टी ने ब्रिटिश कंपनी 'टेटली' का अधिग्रहण किया, जिससे वह दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी चाय कंपनी बन गई।
- **कोरस स्टील (Corus):** टाटा स्टील ने 2007 में यूरोपियन कंपनी 'कोरस' का ऐतिहासिक अधिग्रहण किया। 1990 के दशक में टाटा स्टील को घाटे के कारण बेचने की सलाह दी गई थी, लेकिन रतन टाटा ने इसके कार्यबल को मानवीय तरीके से 78,000 से घटाकर 43,000 किया, तकनीक में सुधार किया और इसे दुनिया की अग्रणी स्टील कंपनियों में ला खड़ा किया।
- **जगुआर लैंड रोवर (Jaguar Land Rover):** 2008 में रतन टाटा ने अमेरिका की फोर्ड कंपनी से ब्रिटेन के दो सबसे प्रतिष्ठित ऑटोमोबाइल ब्रांड 'जगुआर' और 'लैंड रोवर' को खरीदा। यह एक अत्यंत साहसिक और सफल कदम साबित हुआ।

टाटा नैनो (Tata Nano): आम आदमी की कार

रतन टाटा ने एक बार देखा कि एक पूरा परिवार (पति, पत्नी और बच्चे) एक स्कूटर पर बारिश में भीगते हुए जा रहा था। इस दृश्य ने उन्हें आम भारतीय परिवार के लिए एक सुरक्षित, सस्ती और आरामदायक कार बनाने के लिए प्रेरित किया। जनवरी 2008 में उन्होंने 1 लाख रुपये की कार 'टाटा नैनो' पेश की, जिसे 'पीपल्स कार' कहा गया। पश्चिम बंगाल के सिंगूर में भूमि अधिग्रहण विवाद के बावजूद, उन्होंने संयम दिखाया और प्लांट को रातों-रात साणंद (गुजरात) स्थानांतरित कर दिया।

अध्याय 7: टाटा की प्रमुख कंपनियाँ और उनका विस्तार

पुस्तक के अंतिम भाग में टाटा समूह की प्रमुख कंपनियों का विस्तार से वर्णन है:

- **टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS):** रतन टाटा के समय में टीसीएस का अभूतपूर्व विकास हुआ। आज यह दुनिया की सबसे बड़ी आईटी और सॉफ्टवेयर सेवा कंपनियों में से एक है।
- **टाटा केमिकल्स:** दरबारी सेठ के नेतृत्व में मीठापुर (गुजरात) और बबराला (यूपी) में बड़े प्लांट स्थापित किए गए। यह सोडा ऐश और यूरिया के उत्पादन में विश्व स्तर पर अग्रणी है।
- **टाटा पावर:** यह भारत की सबसे बड़ी निजी बिजली उत्पादक कंपनी है, जिसने जलविद्युत से लेकर सौर और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में बड़े कदम उठाए हैं।

निष्कर्ष और परोपकार

रतन टाटा एक सौम्य, गरिमामय और दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी हैं। टाटा समूह अपनी आय का 65% से अधिक हिस्सा अपने ट्रस्टों के माध्यम से परोपकारी और सामाजिक कार्यों में लगाता है। कैंसर अस्पतालों के निर्माण से लेकर शिक्षा, ग्रामीण विकास और आपदा प्रबंधन (जैसे सुनामी या 26/11 हमले) तक, रतन टाटा ने हमेशा देश और मानवता को पहले रखा है। ए.के. गांधी की यह पुस्तक यह स्पष्ट रूप से स्थापित करती है कि रतन टाटा केवल एक उद्योगपति नहीं, बल्कि भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास के एक महान शिल्पी हैं।